प्रसंगश:

आलोक मेहता

# आदर्श व्यक्ति या विचार

मुंबई में ऐतिहासिक भीड़ जुटाकर शिवसेना और उसका साथ देने वाली भारतीय जनता पार्टी ने यह साबित करने की कोशिश की कि बाल ठाकरे 'महापुरुष' थे और उनकी अंतिम यात्रा के दौरान महात्मा गांधी, बी.आर. आंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी की अंतिम विदाई से अधिक लोग जुटे। बाल ठाकरे की मृत्यु पर हुए राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन और शिवाजी पार्क में ही स्मारक बनाए जाने के मुद्दे पर देशभर में अलग-अलग आवाज सुनाई दी। बाल ठाकरे की विरासत और शिवसेना की राजनीतिक शक्ति की असली परीक्षा अगले चुनाव में ही हो पाएगी लेकिन उनके उत्तराधिकारी तथा समर्थकों ने बाल ठाकरे के वैचारिक मानदंडों में किसी तरह के परिवर्तन का कोई संकेत नहीं दिया है। कार्टूनिस्ट के रूप में जीवन यात्रा शुरू करने वाले और अंतिम दिनों तक 'सामना' अखबार के संपादक के रूप में आग उगलने वाले बाल ठाकरे के लिए 'मुंबई बंद' होने पर की गई सामान्य टिप्पणी पर दो लड़कियों की गिरफ्तारी एवं तोड़-फोड़ क्या 'हिंदुत्व अभिव्यक्ति के महानायक' का अपमान नहीं है? शिवाजी पार्क ही नहीं, मुंबई और महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों में बाल ठाकरे की मूर्तियां, स्मारक बनवाने मात्र से क्या उन्हें 'गांधी' जैसा सम्मान कोई दे सकेगा? बाल ठाकरे अकेले नहीं है, स्वयं शिवाजी से लेकर तिलक, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, हेडगेवार, जगजीवन राम, कांशीराम, मायावती तक की मूर्तियां देश के विभिन्न शहरों में दिखती है लेकिन उनके आदर्शों, विचारों पर चलने वाले कितने लोग मिलते है? व्यक्ति और मूर्तिपूजक देश में हजारों लोग भावुकता के साथ किसी को भी 'भगवान का अवतार' मानने लगते हैं। उन्हें महामानव, संत, स्वामी, महात्मा, बापू इत्यादि पुकारने में उन्हें कभी हिचकिचाहट नहीं होती। बाल ठाकरे तो हजारों लोगों को गैस चैंबर में डालकर मार देने वाले हिटलर को अपना 'आदर्श' बताते रहे। गनीमत है कि हिटलर के विचारों को समाज में अमल करने लायक शक्ति ठाकरे नहीं जुटा पाए।

वर्तमान युग में हिटलर के अनुयायी कम ही मिलेंगे लेकिन मानवता, अहिंसा, ईमानदारी जैसे आदर्शों और सही अर्थों में महापुरुष रहे लोगों के विचारों का अनुगमन करने वाले भी मुश्किल से मिलते है। उनके नामों, फोटो, मूर्तियों, स्मारकों के बल पर राजनीति या व्यापार करने वाले निरंतर बढ़ते गए है। महात्मा गांधी के नाम और टोपी का इस्तेमाल करने वाले कितने ही लोग स्वयं को 'देवता तुल्य' सिद्ध करने लगे। नेहरू के नाम पर 60 वर्षों तक राजनीति करने वाले अनेक कांग्रेसी या अन्य लोग विपरीत दिशा में बह गए। जो नहीं बहे, वे नाम तो लेते है लेकिन उनके विचारों को नई पीढ़ी और गांव-गांव तक पहुंचाने की कोशिश तक नहीं करते। महात्मा गांधी के विचारों का साहित्य तो सरकारी या गैर सरकारी स्तर पर बाजार में उपलब्ध हो जाता है लेकिन नेहरू के लेखन, विचारों, भाषणों की पुस्तकें सस्ते दामों पर खरीदने के लिए कहां उपलब्ध है? उन सब पर उनके नाम पर बने ट्रस्ट का अधिकार है और रॉयल्टी में चाहे कितने ही करोड़ आ जाते हों लेकिन वे पुस्तकें जन सामान्य को 5-10 में कभी उपलब्ध नहीं हो सकतीं। सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम आदर से लेने वाले शीर्ष नेताओं की कभी कमी नहीं रही लेकिन हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में पटेल के जीवन और विचारों का कितना साहित्य उपलब्ध है? मौलाना आजाद, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लालबहादुर शास्त्री, विनोबा भावे, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के विचारों के संकलित संस्करण सस्ते मूल्यों पर आसानी से आज तक उपलब्ध नहीं है। जयप्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया के समर्थक राज्यों के साथ राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण पदों पर पहुंचे। पचासों किताबें निकलीं लेकिन आज जन-जन तक पहुंचाने की कौन-सी व्यवस्था है? तभी तो हिंसा और खूनी क्रांति के समर्थक नक्सली संगठन माओ के विचार सुदूर जंगलों के अर्द्धशिक्षित लोगों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं। भोले-भाले लोगों को जहरीले विचारों, जहरीले हथियारों, विस्फोटकों से लैस किया जा रहा है।

राजनीतिक-सामाजिक महापुरुषों की बातें समय के साथ कुछ हद तक बदल सकती है या उनको मानने वाले कम हो सकते है लेकिन करोड़ों लोग अपने-अपने धर्म की किताबों से कंठस्थ किए मंत्र, उपदेश जपते हैं। उनके सही अर्थ भी कितने लोग समझते हैं। संस्कृत, फारसी-अरबी-उर्दू, अंग्रेजी में लिखी पंक्तियां पढ़कर मानसिक सुकून भले ही मिल जाता हो, जन सामान्य तो अर्थ समझ ही नहीं पाते तो व्यवहार में कैसे लाएंगे? इसी वजह से गांधी के नाम और टोपी की तरह ईश्वर के अवतारों के नाम पर कितने ही पाखंडी अपनी दुकान चला रहे हैं। मूर्तियां कितनी ही भव्य, स्वर्ण-हीरों से जड़ित हों लेकिन उपासना स्थल से कुछ किलोमीटर दूर पचासों उपासक शोषण, अत्याचार, पाप करते हुए मिल जाते है। मूर्ति पूजा विरोधी स्वामी दयानंद के आदर्शों को सामने रखकर आर्यसमाज बना लेकिन वर्तमान दौर में स्वामी दयानंद की मूर्ति न सही, फोटो लगाकर अर्चना करने वाले बहुत से लोग मिलते है और उनके विचारों के अनुसार ईमानदारी, सत्य, त्याग के बजाय कहीं आर्य समाज को, कहीं उनके नाम पर बने शैक्षणिक संस्थानों को संपत्ति के लिए सड़क से अदालतों तक लड़ाई करते मिल जाते हैं। संसद भवन में भारत के संविधान निर्माताओं, राष्ट्रपति-पूर्व प्रधानमंत्रियों के चित्रों पर हर साल पुष्प अर्पित कर संदेश देने के आयोजन होते हैं लेकिन क्या उनकी आदर्श परंपराओं का पालन संसद सत्र के दौरान होता है? महत्व और सम्मान व्यक्ति का होता ही है लेकिन उससे अधिक महत्ता उनके विचारों-आदर्शों की है। उनका पालन कितने लोग करना चाहते है?

alokmehta@nationalduniya.com